श्रीकृष्णावधूतेन विरचितम्

श्री अक्षर मालिका स्तोत्रम्

अज्ञाननाशाय विज्ञानपूर्णाय सुज्ञानदात्रे नमस्ते गुरो ।
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १ ॥

आनंदरूपाय नंदात्मज श्री पदांभोजभाजे नमस्ते गुरो ।
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २ ॥

इष्टप्रदानेन कष्टप्रहाणेन शिष्टस्तुत श्री पदांभोज भो ।
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३ ॥

ईडे भवत्पादपाथोजमाध्याय भूयो पि भूयो भयात् पाहि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४ ॥

उग्रं पिशाचादिकं द्रावयित्वाशु सौख्यं जनानां करोषीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५ ॥

उग्रं पिशाचादिकं द्रावयित्वाशु सौख्यं जनानां करोषीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५ ॥

ऊर्जत्कृपापूर पाथोनिधे मंक्षु तुष्टोनुगृह्णासि भक्तान् विभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ६ ॥

ऋजूत्तम प्राण पादार्चन प्राप्त माहात्म्यसंपूर्णसिद्धेश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ७ ॥

ऋजुस्वभावाप्तभक्तेष्ठकल्पद्रु रूपेशभूपादिवंद्य प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ८ ॥

ऋृद्धंयशस्ते विभाति प्रकृष्टं प्रपन्नार्तिहंतर्महोदार भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ९ ॥

क्लप्ताति भक्तौघ काम्यार्थ दातर्भवांभोदि पारंगत प्राज्ञ भो ।
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १० ॥

एकांतभक्ताय माकांतपादाब्ज उच्चाय लोके नमस्ते विभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ११ ॥

ऐश्वर्यभूमन् महाभाग्यदायिन् परेषां च कृत्यादि नाशिन् प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १२ ॥

ओंकार वाच्यार्थभावेन भावेन लब्धोदयश्रीश योगीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १३ ॥

और्वानलप्रख्य दुर्वादि दावानलैः सर्वतंत्र स्वतंत्रेश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १४ ॥

अंभोज संभूत मुख्यामराराध्य भूनाथभक्तेश भावज्ञ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १५ ॥

अस्तंगतानेक मायादिवादीश विद्योतिताशेषवेदांत भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १६ ॥

काम्यार्थदानाय बद्धादराशेष लोकाय सेवानुसक्ताय भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १७ ॥

खद्योतसारेषु प्रत्यर्थिसार्थेषु मध्याह्नमार्तांडबिंबाभ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १८ ॥

गर्विष्ठ गर्वांबुशोषार्यमात्युग्र नम्रांबुधेर्यामिनीनाथ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १९ ॥

घोरामयध्वांत विध्वंसनोद्धाम देदीप्यमानार्कबिंबाभ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २० ॥

ङणत्कार दंडांक काषाय वस्त्रां क कौपीन पीनांक हंसांक भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २१ ॥

चंडीश कांडेश पाखंडवाक्कांड तामिस्रमार्तांड पाषंड भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २२ ॥

छद्माणुभागं न विद्मस्त्वदंतः सुसध्मैव पद्माधवस्यासि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २३ ॥

जाड्यं हिनस्ति ज्वरार्शः क्षयाद्याशु ते पादपद्मांबुलेशोऽपि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २४ ॥

झषध्वजीयेष्वलभ्योरुचेतः समारूढमारूढवक्षोंग भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २५ ॥

ञांचाविहीनाय यादृच्छिक प्राप्त तुष्टाय सद्यः प्रपन्नोऽसि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २६ ॥

टीकारहस्यार्थ विख्यापनग्रंथ विस्तारलोकोपकर्तः प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २७ ॥

ठंकुवरीणाममेय प्रभावो द्धरापार संसारतो मां प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २८ ॥

डाकिन्यपस्मारघोरादिकोग्र ग्रहोच्चाटनोदग्रवीराग्र्य भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २९ ॥

ढक्कादिकध्वान विद्राविताऽनेक दुर्वादिगोमायुसंघात भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३० ॥

णात्मादिमात्रर्णलक्ष्यार्थक श्री पतिध्यान सन्नद्धधीसिद्ध भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३१ ॥

तापत्रय प्रौढबाधाभिभूतस्य भक्तस्य तापत्रयं हंसि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३२ ॥

स्थानत्रय प्रापकज्ञानदातः स्त्रिधामांघ्रिभक्तिं प्रयच्च प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३३ ॥

दारिद्र्य दारिद्र्य योगेन योगेन संपन्नसंपत्तिमाधेहि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३४ ॥

धावंति ते नामधेयाभिसंकीर्त्य नेनैनसामाशु वृंदानि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३५ ॥

नानाविधानेक जन्मादि दुःखौघ तः साध्वसं संहरोदार भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३६ ॥

पाता त्वमेवेति माता त्वमेवेति मित्रं त्वमेवेत्यहं वेद्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३७ ॥

फालस्तुदुर्दैववर्णावलीकार्य लोपेऽपि भक्तस्य शक्तोऽसि भो
ह्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३८ ॥

बद्धोऽस्मि संसारपाशेन तेंऽघ्रीं विन्याऽन्यागतिर्नेत्यवेमि प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३९ ॥

भावे भजामीह वाचा वदामि त्व दीयं पदं दंडवत् स्वामि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४० ॥

मान्येषु मान्योसि मत्या च धृत्या च मामद्य मान्यं कुरु द्राग् विभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४१ ॥

यं काममाकामये तं न चापं ततस्त्वं शरण्यो भवत्येमि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४२ ॥

राजादिवश्यादि कुक्षिंभरानेक चातुर्यविद्यासु मूढोऽस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४३ ॥

लक्षेषु ते भक्तवर्गेषु कुर्वेक–लक्ष्यं कृपापांगलेशस्य मां
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४४ ॥

वारांगनाद्यूत चौयान्यदारा–रतत्वाद्यवद्यत्वतो मां प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४५ ॥

शक्तोन शक्तिं तव स्तोतुमाध्यातु मीदृक्वहं किं करोमीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४६ ॥

षड्वैरिवर्गं ममारान्निराकुर्व मंदो हरेरांघ्रिरागोऽस्तु भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४७ ॥

सन्मार्गसच्छास्त्र सत्संग सद्भक्ति– सज्ञान संपत्तिमाधेहि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४८ ॥

हास्यास्पदोहं समानेष्वकीर्त्या तवांघ्रिं प्रपन्नोऽस्मि संरक्ष भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४९ ॥

लक्ष्मीविहीनत्व हेतोः स्वकीयैः सुदूरीकृतोऽस्म्यद्य वाच्योऽस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५० ॥

क्षेमंकरस्त्वं भवांभोधिमज्ज ज्जनानामिति त्वां प्रपन्नोस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५१ ॥

कृष्णावधूतेन गीतेन मात्रक्ष राद्येन गाथास्तवेनेढ्य भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५२ ॥

इति श्रीमत्कृष्णावधूतकृतौ श्रीराघवेंद्रतंत्रे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे
गाथास्तुतिः नाम प्रदक्षिण पद्यावलिरिति एकादशः पटलः समाप्तः ॥

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥